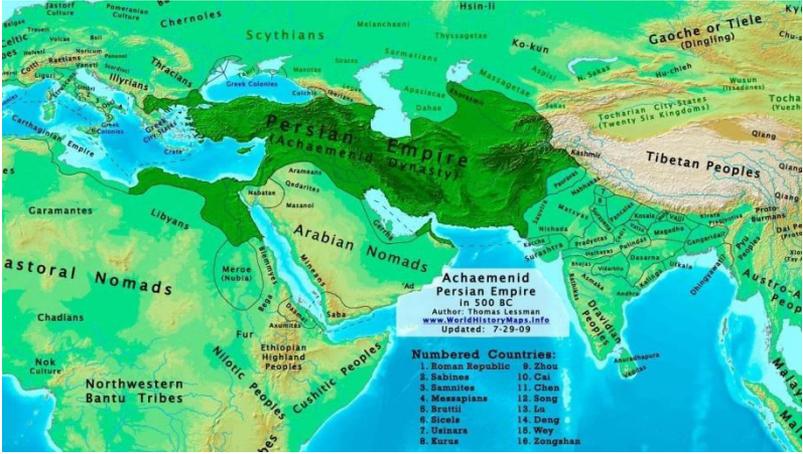


प्राचीन भारतवर्ष



Swatantar Jain Jalandhar

9855285970



प्राचीन भारतवर्ष

प्राचीन भारत का आतीत बहुत सुन्दर और समृद्ध है। सभ्यता-संस्कृति और धर्म समस्त विश्व को दिया। ब्रह्मांड में जम्बू द्वीप में से एक है भरतक्षेत्र जिसे हम पृथ्वी कहते हैं। इस समय पृथ्वी पर अनेको देश और उन सब की अपनी-अपनी सभ्यता हैं। इन सब सभ्यताओं में से प्राचीन सभ्यता है तो वह है भारतीय सभ्यता। भारतीय सभ्यता जैन एवं वैष्णव (वैदिक) अति प्राचीन है, वास्तव में दोनों एक जैसी

ही है, दोनो अहिंसा पर आधारित हैं। विश्व की अन्य सभ्यताओं का इतिहास लगभग 5000 -6000 वर्ष पुराना मिलता है, लगभग महाभारत काल के बाद का । जैन सभ्यता का उद्गम भगवान ऋषभदेव से आरंभ होता है, जो करोड़ों वर्ष पुराना है, इनसे पूर्व युगलियों का समय था और उन के मुखियों को वैष्णव में मनु एवं जैन दर्शन में कुलकर नाम से जाना जाता था। दोनों सभ्यताओं में मनु एक समान है परन्तु नाम अलग-अलग हैं। सातवें मनु महाराज नाभि के पुत्र हुए ऋषभदेव। जैन दर्शन में ऋषभदेव के पूर्व 13 भव का वर्णन भी मिलता है। ऋषभदेव ने पूर्वभव के जन्मों की तपस्या से ज्ञान का अक्षय भण्डार संचित कर लिया था। ऋषभदेव के दो पुत्र भरत और बाहूबली के साथ 98 अन्य पुत्र और दो पुत्रीयाँ ब्रह्मी और सुन्दरी हुई जिन्हें अथाह ज्ञान दिया गया। 83 लाख पूर्व गृहस्थ में रहकर समस्त ज्ञान दिया और जनमानस को जीवन जीने की कलह सिखाई। मानव के मन में भातृभाव की ज्योत जगाई और अन्त में अपने बड़े बेटे चक्रवर्ती भरत को राज्य देकर सन्यास धारण किया और इनके साथ 4000

मानवों ने भी गृह त्याग कर इनके साथ ऋषि बन गये। जो ऋषभ से ऋषि परम्परा का आरम्भ हुआ और संन्यास धारण करने से शरीर से शिव हो गये। दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात एक हजार वर्ष तक ग्रामानिग्राम विचरण करते तपश्चरण द्वारा आत्मस्वरूप को प्रकाशित करते रहे। फाल्गुण कृष्णा एकादशी के दिन अष्टम तप के साथ चार घातिक कर्मों को क्षय कर केवलज्ञान (ब्रह्मज्ञान) की प्राप्ति हुई। केवलज्ञान की प्राप्ति से अब अरिहन्त हो गये। बारह गुण प्रकट हुए जो इस प्रकार हैं-

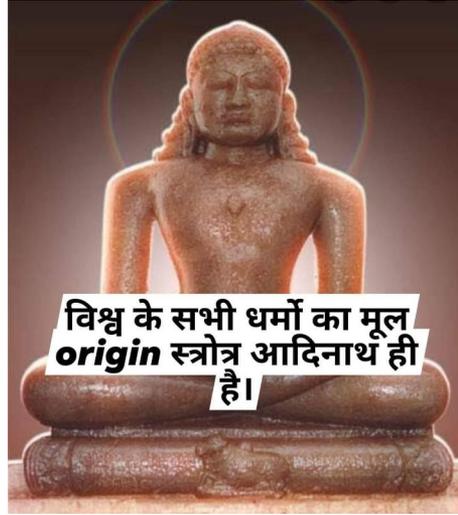
(1) अनन्त ज्ञान (2) अनन्त दर्शन (3) अनन्त चारित्र (वीतराग भव) (4) अनन्त बल-वीर्य (5) अशोक वृक्ष (6) देवकृत पुष्प-वृष्टि (7) दिव्य-ध्वनि (8) चामर (9) स्फटिक सिंहासन (10) छत्र-त्रय (11) आकाश में देव-दुदभि (12) भामण्डल । पांच से बारह तक देवों द्वारा यह महिमा की जाती है। सामान्य अरिहन्त और तीर्थंकर अरिहन्त में खास विशेषताएं होती हैं। तीर्थंकरों के 34 अतिशय रूप में होती हैं। ऋषभदेव 99 हजार पूर्व तक अरिहन्त पद पर धर्म देशना करते हुए, तीर्थ स्थापना की, साधु-साध्वी,

श्रावक-श्राविका। अन्त समय जानकर 10000 अन्तेवासी साधुओं के साथ भगवान ऋषभदेव अष्टापद पर्वत पर संथारा ग्रहण कर माघ कृष्ण त्रयोदशी 6 दिन के उपवास कर निर्वाण प्राप्त हो गये।

लोक में ब्रह्मा नाम का जो देव प्रसिद्ध है, वह भगवान ऋषभदेव को छोड़ अन्य कोई नहीं। जब ऋषभदेव को केवलज्ञान हुआ वही ब्रह्मज्ञान है, जब वह संसार में रहकर राज्य का कार्यभार संभाला तो समस्त विद्याएं असि, मसि, कसि (दुःख- सुख) जीने की कला सिखाई तब वह विष्णु कहलाए, संसार से मुक्त होकर संन्यास धारण किया तो शरीर से शिव हो गये। ऋषि शब्द भी ऋषभ से ही बना, जिन्होंने ने ऋषभ के ज्ञान को धारण किया, वह ऋषि कहलाए।

सृष्टि स्थित्यता करणी ब्रह्म विष्णु शिवाभिधाम।
स संज्ञा यन्ति भगवानेक एव जनार्दनः॥

वह एक ही भगवान सृष्टि का उत्पादन पालन और संहारक करता है। उसी के नाम ब्रह्मा विष्णु महेश हैं।



ऋषभदेव ने घोर तपस्या से कैवल्यज्ञान (ब्रह्मज्ञान) प्राप्त कर ब्रह्मा हो गये। 4000 ऋषियों को अथाह ज्ञान दिया, जिससे उनके पास अनेकों विद्याएं प्राप्त होने से देश विदेश में धर्म प्रचार होने लगा। महाराज चक्रवर्ती भरत छः खण्ड पर राज्य जिसमें समस्त पृथ्वी आ जाती है, वहाँ ऋषियों का मन्त्र विद्याओं से आना जाना हुआ और समस्त पृथ्वी पर ज्ञान बांटा। परन्तु प्रमुख केन्द्र भारतवर्ष ही रहा। करोड़ों वर्ष का इतिहास किसी देश के पास नहीं, परन्तु भारतवर्ष में यह परम्परा चलती रही और लम्बे अंतराल के पास तीर्थकर होते रहे और ईसा से पूर्व 500 वर्ष जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थकर भगवान

महावीर और इन्हीं के समकालीन भगवान बुद्ध हुए। इतने लम्बे अंतराल में अन्य देशों में जहां भारतीय धर्म थे उनकी रूप रेखा भी समयानुसार बदल गई। द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव से वहाँ के विद्वानों ने समयानुसार उसको अपनी सभ्यता में ढाल लिया। यह लगभग 4000-5000 वर्ष पूर्व की बात है जब भारतवर्ष में महाभारत का समय कहा जाता है। उस समय ऋषभदेव की स्तवना वेदों में भी की गई है।

वेद लिखे जाने से बहुत पहिले जैन धर्म अस्तीत्व में था।

भारत के राष्ट्रपति डॉ राधा कृष्णन

ॐ नमोअर्हन्तो ऋषभो वा, ॐ ऋषभं पवित्रम् ।

यजुर्वेद अ 25, मंत्र 16

ऋषभ सर्वश्रेष्ठ पवित्र हैं, अरिहन्त ऋषभ को नमस्कार करता हूँ ।

ॐ त्रैलोक्यप्रतिष्ठिताना चतुर्विंशतितीर्थकरणम् ।

ऋषभादिवद्धर्मानान्तानां , सिद्धानां शरणं प्रपद्ये ॥

ऋग्वेद

ऋषभदेव से वर्द्धमान पर्यन्त जो चौबीस तीर्थकर तीन लोक में प्रतिष्ठत हैं, मैं उनकी शरण ग्रहण करता हूं। उन्हें 3 अलग-अलग देवताओं के रूप में माना जाता है-ब्रह्मा-(जब उन्हें आत्मा का ब्रह्मज्ञान मिला) विष्णु- (जब वे विश्व के पहले राजा बनकर प्रजा का पालन करते थे) शिव- (जब वे विश्व के पहले तपस्वी बने) ये सभी 3 अलग-अलग नहीं लेकिन एक ही महात्मा भगवान आदिनाथ थे। बौद्धधर्म में आदिबुद्ध के रूप में भगवान आदिनाथ की ही पूजा की जाती है। वही भगवान आदिनाथ को 4000 साल पहले अरब में उत्पन्न हुए यहूदी धर्म (jews) में पहले पैगंबर आदिमबाबा/Adam के रूप में माना जाता है। लेकिन यहूदी धर्म में भगवान आदिनाथ के दोनो बेटे काबिल (भरत चक्रवर्ती) और हाबिल (बाहुबलि) की कहानी को एक काल्पनिक निर्माता के अस्तित्व को साबित करने के लिए दूसरे तरीके से बदल दी गई है। लेकिन हम जैनग्रंथों में वास्तविक कहानी पढ़ सकते हैं। यहूदी धर्म के सभी उपदेश

(commandments) जैन धर्म के मूलभूत सिद्धांतों से ही निकले हैं। यहूदी धर्म के founder इब्राहिम को पहाड़ों में साधना कर रहे एक जैन साधु ने ही आध्यात्मिक ज्ञान का उपदेश दिया था, ईसाई और मुस्लिम धर्म ने भी यहूदी धर्म की तरह तीर्थंकर आदिनाथ को ही पहला पैगंबर (prophet) आदिमबाबा /Adam माना है। विश्व के सभी धर्मों का मूल उद्भव स्रोत एक ही "तीर्थंकर आदिनाथ" ही है। यह महाभारतकाल के पश्चात की घटनाएं हैं। जैन एवं वैष्णव (भारतीय) धर्म ही विश्व धर्म हैं।

लेह, लद्दाख, चीन, तिब्बत, आफगानिस्तान, ईरान और इराक, ब्रह्मा, श्री लंका, नेपाल में बुद्ध धर्म का बहुत प्रचार हुआ। यह भी कहा जाता है कि जहाँ मक्का-मदीना है वहाँ भी वैष्णव मन्दिर था अमेरिका में अर्जुनटाईना अर्जुन के नाम से बसा था। आज भी जर्मन में संस्कृत और प्राकृत भाषा विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है और हिटलर का ध्येय था कि जो बातें हम करते हैं वह ब्रह्माण्ड में रहती है और वह

भगवान कृष्ण की गीता का उपदेश जो अर्जुन को दिया वह सुनना चाहता था अपने विज्ञानिकों के माध्यम से।

कितना प्राचीन है भारतीय धर्म ?



ग्रह भी सिद्ध होता है कि एक समय था जबकि संपूर्ण धरती पर सिर्फ भारतीय थे। मैक्सिको में एक खुदाई के दौरान गणेश और लक्ष्मी की प्राचीन मूर्तियां पाई गईं। अफ्रीका में 6 हजार वर्ष पुराना एक शिव मंदिर पाया गया और चीन, इंडोनेशिया, मलेशिया, लाओस, जापान में हजारों वर्ष पुरानी विष्णु, राम और हनुमान की प्रतिमाएं मिलना इस बात के सबूत हैं कि भारतीय धर्म संपूर्ण धरती पर था। मैक्सिको' शब्द संस्कृत के 'मक्षिका' शब्द से

आता है और मैक्सिको में ऐसे हजारों प्रमाण मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है। जीसस क्राइस्ट्स से बहुत पहले वहां पर भारतीय धर्म प्रचलित था-कोलंबस तो बहुत बाद में आया। सच तो यह है कि अमेरिका, विशेषकर दक्षिण-अमेरिका एक ऐसे महाद्वीप का हिस्सा था जिसमें अफ्रीका भी सम्मिलित था। भारत ठीक मध्य में था। अफ्रीका नीचे था और अमेरिका ऊपर था। वे एक बहुत ही उथले सागर से विभक्त थे। उसे पैदल चलकर पार कर सकते थे। पुराने भारतीय शास्त्रों में इसके उल्लेख हैं। वे कहते हैं कि लोग एशिया से अमेरिका पैदल ही चले जाते थे। यहां तक कि शादियां भी होती थीं। कृष्ण के प्रमुख शिष्य और महाभारत के प्रसिद्ध योद्धा अर्जुन ने मैक्सिको की एक लड़की से शादी की थी। निश्चित ही वे मैक्सिको को मक्षिका कहते थे। लेकिन उसका वर्णन बिल्कुल मैक्सिको जैसा ही है। मैक्सिको में भारतीयों के देवता गणेश की मूर्तियां हैं, दूसरी ओर इंग्लैंड में गणेश की मूर्ति का मिलना असंभव है। कहीं भी मिलना असंभव है, जब तक कि वह देश

भारतीय धर्म के संपर्क में न आया हो, जैसे सुमात्रा, बाली और मैक्सिको में संभव है, लेकिन और कहीं नहीं, जब तक वहां भारतीय धर्म न रहा हो। मैं जो यह कुछ उल्लेख कर रहा हूं, अगर तुम इसके बारे में और अधिक जानकारी पाना चाहते हो तो तुम्हें भिक्षु चमन लाल की पुस्तक 'हिंदू अमेरिका' देखनी पड़ेगी, जो कि उनके जीवनभर का शोधकार्य है। (स्वर्णिम बचपन : ओशो- प्रवचनमाला सत्र- 6... भारत एक सनातन)। वैष्णव और जैन धर्म : अब तक प्राप्त शोध के अनुसार भारतीय धर्म दुनिया का सबसे प्राचीन धर्म है, लेकिन यह कहना कि जैन धर्म की उत्पत्ति वैष्णव धर्म के बाद हुई तो यह उचित नहीं होगा। ऋग्वेद में आदिदेव ऋषभदेव का उल्लेख मिलता है। त्रैलोक्यप्रतिष्ठिताना चतुर्विंशतितीर्थकरणम् ।

ऋषभादिवद्धर्मानान्तानां , सिद्धानां शरणं प्रपद्ये ॥

ऋग्वेद

राजा जनक भी विदेही (दिगंबर) परंपरा से थे। वैदिक काल में पहले ऐसा था कि परिवार में एक व्यक्ति ब्राह्मण धर्म में दीक्षा लेता था तो दूसरा जैन। इक्ष्वाकू कुल के लोग वैष्णव भी थे और जैन भी। इस देश में दो जड़ें एक साथ विकसित हुईं। जैसे हमारे दो हाथ हैं जिसके बारे में हम कह नहीं सकते कि पहले कौन से हाथ की उत्पत्ति हुई, उसी तरह जैन पहले या वैष्णव? यह कहना अनुचित होगा।

भारतीय धर्म के बाद किस धर्म की उत्पत्ति हुई...
यहूदी धर्म : वैसे वैष्णव धर्म के बाद बहुत से प्राचीन धर्मों का उल्लेख किया जा सकता है, जैसे पेगन, वूडू आदि लेकिन वैष्णव-जैन के बाद यहूदी धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म था जिसने धर्म को एक नई व्यवस्था में ढाला और उसे एक नई दिशा और संस्कृति दी। हजरत आदम से लेकर अब्राहम और अब्राहम से लेकर मूसा तक की परंपरा यहूदी धर्म का हिस्सा है। ये सभी कहीं न कहीं भारतीय धर्म की

परंपरा से जुड़े थे। ऐसा माना जाता है कि राजा मनु को ही यहूदी लोग हज. नूह कहते थे। यहूदी धर्म के पैगंबर हजरत मूसा जानिए यहूदी धर्म की संपूर्ण जानकारी...

यहूदी धर्म के बाद कौन सा धर्म जन्मा...पारसी धर्म : यहूदी धर्म के बाद वैदिक धर्म से ही पारसी धर्म का जन्म हुआ। पारसी धर्म के स्थापक अत्री ऋषि के कुल से थे। पारसी धर्म का उदय ईसा से 700 वर्ष पूर्व पारस (ईरान) में हुआ। पारस को बाद में फारस कहा जाने लगा। फारस पर पारसियों का शासन था। यह पारसी धर्म के लोगों की मूल भूमि है। पारसी धर्म के संस्थापक है जरथुस्त्र। ईरानी लोग जो पारसी धर्म का पालन करते थे, इस्लाम के लगातार हो रहे आक्रमण को झेल नहीं पाए। 7वीं सदी में मोहम्मद बिन कासिम के आक्रमण के बाद पारसियों ने पलायन कर भारत में शरण ली। अब फारस ईरान के रूप में एक मुस्लिम राष्ट्र है। पारसी धर्म को जानिए...

जिन्होंने वैदिक धर्म को एक नई व्यवस्था दी...बौद्ध धर्म : यहूदी धर्म के बाद पांच सौ ई पू अस्तित्व में आया पांचवां सबसे बड़ा धर्म- बौद्ध धर्म। बौद्ध धर्म के संस्थापक थे भगवान बुद्ध। बुद्ध स्वयं भारतीय थे। बौद्ध धर्म को वैदिक धर्म का सबसे नवीनतम और शुद्ध संस्करण माना जाता था। बौद्ध काल आते-आते वैदिक धर्म बिगाड़ का शिकार हो चला था। लोग वैदिक मार्ग को छोड़कर पुराणिकों के बहुदेववादी मार्ग पर चलने लगे थे। भगवान बुद्ध ने पहली दफे धर्म को एक वैज्ञानिक व्यवस्था दी और समाज को एकजुट किया, लेकिन शंकराचार्य के बाद वैष्णवों का बौद्ध धर्म में दीक्षा लेना रुक गया।

बौद्ध धर्म के बाद इस धर्म ने शुरू किया धर्म के लिए युद्ध...ईसाई धर्म : बौद्ध धर्म के बाद आज से 2 हजार वर्ष पूर्व ईसाई धर्म की शुरुआत की ईसा मसीह से। ईसाई धर्म से पूर्व कोई भी धर्म किसी दूसरे धर्म के प्रति हिंसक नहीं था लेकिन ईसाई धर्म ने दुनिया को धर्म के लिए कूसेड करना सिखाया। इतिहास गवाह है कि दुनिया भर में कूसेडर्स ने निर्मम तरीके से दूसरे

धर्म के लोगों की हत्या कर ईसाई धर्म को दुनिया भर में जबरन फैलाया। शुरुआत में जीसस क्राइस्ट के 12 शिष्यों ने इस धर्म का प्रचार-प्रसार किया। बाद में यह धर्म जब स्थापित हो गया तो इसे इसके अनुयायियों ने युद्ध और क्रूसेड के दम पर दुनिया भर में फैलाया। क्राइस्ट के शिष्यों और बाद के ईसाइयों ने ईसाई धर्म को संगठित कर उसे चर्च के अधीन बनाया। इसके लिए उन्होंने बहुत कुछ यहूदी और बौद्ध धर्म से ग्रहण किया।

ईसाई धर्म के बाद इस धर्म के जन्म ने बदल दिया दुनिया का नक्शा...इस्लाम : ईसाई धर्म के बाद आज से 1400 वर्ष पूर्व यानी छठी सदी में इस्लाम धर्म की स्थापना हुई। ह. मोहम्मद ने इस धर्म की शुरुआत की और देखते ही देखते यह धर्म मात्र 100 वर्ष में पूरे अरब का धर्म बन गया। विद्वान लोग इसे पूरी तरह से यहूदी-वैदिक धर्म का मिला-जुला रूप मानते हैं। हजरत मोहम्मद से पहले अरब में धर्म के मनमाने रूप प्रचलित हो चले थे और धर्म पूरी तरह से बिगाड़ का शिकार था। हजरत मोहम्मद ने धर्म को

एक नई व्यवस्था दी ताकि लोग धर्म का अच्छे से पालन कर सकें और सामाजिक अनुशासन में रहें। अंत में जन्मा योद्धाओं का धर्म...सिख धर्म : जब अरब, तुर्क और ईरान के कारण वैष्णव धर्म खतरे में था, चारों ओर युद्ध चल रहा था ऐसे में गुरु नानकदेवजी ने आकर लोगों में भाईचारे और विश्वास का माहौल बनाया। उनका जन्म कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन 1469 को राएभोए की तलवंडी नामक स्थान में हुआ था। तलवंडी को ही अब नानक के नाम पर ननकाना साहब कहा जाता है, जो कि अब पाकिस्तान में है। सिख परंपरा में दस गुरुओं ने मिलकर सिख धर्म को मजबूत किया। अंतिम गुरु गुरुगोविंद सिंहजी ने सिख धर्म को विश्व का सबसे शक्तिशाली धर्म बनाया। तो ये थे वह धर्म जिनके नाम से सभी लोग परिचित हैं। वैदिक, जैन, यहूदी, पारसी, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम और सिख धर्म। लेकिन इन प्रमुख धर्मों के अलावा भी धरती पर और भी कई धर्म थे जिनके बारे में कम ही लोग जानते हैं।

ये धर्म हैं आज भी अस्तित्व में...शिंतो धर्म: जापान के शिंतो धर्म की ज्यादातर बातें बौद्ध धर्म से ली गई थीं फिर भी इस धर्म ने अपनी एक अलग पहचान कायम की थी। इस धर्म में कालांतर में प्राकृतिक शक्तियों, महान व्यक्तियों, पूर्वजों तथा सम्राटों की भी उपासना की जाती थी, किंतु बौद्ध धर्म के प्रभाव से सारी रूढ़ियाँ छूट गईं लेकिन 1868-1912 में शिंतो धर्म ने बौद्ध विचारों से स्वतंत्र होकर अपने धार्मिक मूल्यों की पुनः व्याख्या और स्थापना कर इसे जापान का 'राजधर्म' बना दिया गया।[शिंतो धर्म की संपूर्ण जानकारी...](#)जेन धर्म : जेन (zen) को जेन भी कहा जाता है। यह सम्प्रदाय जापान के सेमुराई वर्ग का धर्म है। जेन का विकास चीन में लगभग 500 ईस्वी में हुआ। चीन से यह 1200 ईस्वी में जापान में फैला। प्रारंभ में जापान में बौद्ध धर्म का कोई संप्रदाय नहीं था किंतु धीरे-धीरे वह बारह सम्प्रदायों में बँट गया जिसमें जेन भी एक था। हालांकि चीन में

लाओत्से और कन्यूशियस की विचारधारा भी थी।जेन धर्म की संपूर्ण जानकारी आदिवासियों के धर्म...पेगन धर्म : पेगन धर्म को मानने वालों को जर्मन के हिथ मूल का माना जाता है, लेकिन ये रोम, अरब और अन्य इलाकों में भी बहुतायत में थे, हालाँकि इसका विस्तार यूरोप में ही ज्यादा था। एक मान्यता अनुसार यह अरब के मुशरिकों के धर्म की तरह था और इसका प्रचार-प्रसार अरब में भी काफी फैल चुका था। यह धर्म ईसाई धर्म के पूर्व अस्तित्व में था।

पेगन धर्म पर संपूर्ण जानकारी-जानें वूडू धर्म
को: वूडू... इसे आप कोई भी नाम दे सकते हैं, क्योंकि यह दुनियाभर की आदिम जातियों, आदिवासियों का प्रारंभिक धर्म रहा है। इस तरह की परंपरा को अंग्रेजी में टेबू कह सकते हैं। यह आज भी दुनियाभर में जिंदा है। नाम कुछ भी हो, पर इसे आप आदिम धर्म कह सकते हैं। इसे लगभग 6,000 वर्ष से भी ज्यादा पुराना धर्म माना जाता है।

जानें बूड़ धर्म की संपूर्ण जानकारी-इस्लाम से पहले अरब में कौन सा धर्म था प्रचलित...मुशरिकों का धर्म : 600 ईसा पूर्व ईस्वी से पूर्व इस्लाम से पहले अरब में तीन परंपरा प्रचलन में थी। एक अरब का पुराना धर्म जिसे दीने इब्राहीमी कहा जाता था। यह इब्राहीमी धर्म ही बिगाड़ का शिकार होकर मुशरिकों का धर्म बन चुका था। दूसरा यहूदी धर्म और तीसरा ईसाई धर्म। मुशरिकों में से कुछ मुसलमान बन गए और कुछ जंग में मारे गए। इस्लाम की लड़ाई जहां मुशरिकों से थे वहीं यहूदी और ईसाइयों से भी थी। इस कश्मकश में इस्लाम जीतता गया। मुशरिक अपने पूर्वजों और योद्धाओं की कब्रों की पूजा करते थे और उनसे आशीर्वाद मांगते थे। मुशरिक काबा को अपना इबादतगाह मानते थे। काबा में 300 से ज्यादा मूर्तियां रखी थीं और उसके आसपास कब्रें थीं। यहूदी भी यहीं पूजा करते थे। मुशरिक बहुदेववादी और मूर्तिपूजक थे। बहुत से विद्वान मानते हैं कि ये सभी वैदिक थे व इनका समाज मुशरिक था, लेकिन वैष्णव विद्वान इस बात से इत्तेफाक रखते हैं। इस पर

विवाद हैं। मुशरिक का अर्थ होता है ईश्वर को छोड़कर या ईश्वर के अतिरिक्त अन्य को पूजने वाला बहुदेववादी। वैदिक तो एकेश्वरवादी धर्म है। इराक और सीरिया में सुबी नाम से एक जाति है यही साबिईन है। इन साबिईन को अरब के लोग वैदिक मानते थे। साबिईन अर्थात् नूह की कौम। भारतीय मूल के लोग बहुत बड़ी संख्या में यमन में आबाद थे, जहां आज भी श्याम और वैष्णव नामक किले मौजूद हैं। इस्लाम ने जब अरब से बाहर कदम रखा तो उनका पहला सामना पारसी धर्म के लोगों से हुआ। उन्होंने पारसी धर्म के लोगों को ईरान से खदेड़ दिया उसी तरह जिस तरह की अफगानिस्तान और पाकिस्तान से वैष्णव, जैन और बौद्धों को खदेड़ दिया।

वैष्णव धर्म की प्राचीनता के प्रमाण... जब हम इतिहास की बात करते हैं तो वेदों की रचना किसी एक काल में नहीं हुई। विद्वानों ने वेदों के रचनाकाल की शुरुआत 4500 ई.पू. से मानी है अर्थात् ये धीरे-धीरे रचे गए और अंततः कृष्ण के समय में वेदव्यास

द्वारा पूरी तरह से वेद को चार भागों में विभाजित कर दिया गया। इस मान से लिखित रूप में आज से 6508 वर्ष पूर्व पुराने हैं वेद। यह भी तथ्य नहीं नकारा जा सकता कि कृष्ण के आज से 5500 वर्ष पूर्व होने के तथ्य ढूँढ लिए गए। वैदिक और जैन धर्म की उत्पत्ति पूर्व आर्यों की अवधारणा में है, जो 4500 ई.पू. (आज से 6500 वर्ष पूर्व) मध्य एशिया से हिमालय तक फैले थे। कहते हैं कि आर्यों की ही एक शाखा ने पारसी धर्म की स्थापना भी की। इसके बाद क्रमशः यहूदी धर्म 2 हजार ई.पू., बौद्ध धर्म 500 ई.पू., ईसाई धर्म सिर्फ 2000 वर्ष पूर्व, इस्लाम धर्म 1400 साल पहले हुए। लेकिन धार्मिक साहित्य अनुसार वैदिक धर्म की कुछ और धारणाएं भी हैं। मान्यता यह भी है कि 90 हजार वर्ष पूर्व इसकी शुरुआत हुई थी। जवाहरलाल नेहरू कि 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' और रामशरण उपाध्याय की किताब

'बृहत्तर भारत' में हिंदू धर्म और भारत के इतिहास के बारे में विस्तार से मिल सकता है ।

वास्तव में आर्य भारतीय थे, आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ, यह उत्तरी भारत में फैले हे थे, यह सभी द्राविड़ थे और जैन धर्मानुयायी थे। जब आक्रमण हुए तो यह दक्षिण भारत में चले गये। कुछ आर्य विदेशों में व्यापार करते थे, जब इस्लाम का बोलबाला हुआ तो वह सब वापिस भारत आ गये। कुछ विदेशी इतिहासकार कहते हैं कि यह सब सिन्धु घाटी की सभ्यता है और विदेशी विशेषकर पारसी स को ह बोलते थे, यह भी उचित नहीं, यदि वह स को ह बोलते तो संस्कृत को भी हंकृत बोलते। पारसियों ने भारतियों को धर्मांतरण करने का प्रयास किया, जिन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया तो ठीक, कुछ को मार डाला, जिन्होंने डटकर मुकाबला किया उन्हें हिन्दु कह दिया, जो उनकी भाषा में गुलाम था और भारतीयों को इसका अर्थ मालूम नहीं था। जब अंगरेज भारत में आ गये तो हिन्दू-मुस्लिम एकट बना दिया। हिन्दु-हिन्दोस्तान और हिन्दुकुश यह शब्द भारत में बारहवीं सदी में आए। वास्तव में हिन्दुकुश

नाम परियाव और अफगानिस्तान का नाम आर्यना था, जो भारतवर्ष का एक प्रदेश था।

हिन्दूकुश पर्वतमाला की सचाई जानिए

हिन्दूकुश उत्तरी पाकिस्तान से मध्य अफगानिस्तान तक विस्तृत एक 800 किमी लंबी वाली पर्वत श्रृंखला है। यह पर्वतमाला हिमालय क्षेत्र के अंतर्गत आती है। दरअसल, हिन्दूकुश पर्वतमाला पामीर पर्वतों से जाकर जुड़ते हैं और हिमालय की एक उपशाखा माने जाते हैं। पामीर का पठार, तिब्बत का पठार और भारत में मालवा का पठार धरती पर रहने लायक सबसे ऊंचे पठार माने जाते हैं। प्रारंभिक मनुष्य इसी पठार पर रहते थे।

हिन्दूकुश पर्वतमाला के बीचोबीच सबसे ऊंचा पहाड़ पाकिस्तान के खैबर-पख्तूनख्वा प्रांत के चित्राल जिले में स्थित है जिसे वर्तमान में तिरिच मीर पर्वत कहते हैं। हिन्दूकुश का दूसरा सबसे ऊंचा पहाड़ नोशक पर्वत और तीसरा इस्तोर-ओ-नल है। उत्तरी पाकिस्तान में हिन्दूकुश पर्वतमाला और काराकोरम पर्वतमाला के बीच स्थित एक हिन्दू राज

पर्वत श्रृंखला है। इस पर्वत श्रृंखला में कई ऋषि-मुनियों के आश्रम बने हुए थे, जहां भारत और हिन्दूकुश के उस पार से आने वाले जिज्ञासुओं, छात्रों आदि के लिए शिक्षा, दीक्षा और ध्यान की व्यवस्था थी। आज इस हिन्दू राज पर्वतमाला के प्रमुख पहाड़ों के नाम बदल दिए गए हैं, जैसे एक कोयो जुम नामक बहुत लंबा पहाड़ है। दूसरा बूनी जुम और तीसरा गमुबार जुम हैं। उल्लेखनीय है कि काराकोरम एक विशाल पर्वत श्रृंखला है जिसका विस्तार पाकिस्तान, भारत और चीन के क्रमशः गिलगित-बाल्तिस्तान, लद्दाख और शिन्जियांग क्षेत्रों तक है। काराकोरम, पूर्वोत्तर में तिब्बती पठार के किनारे और उत्तर में पामीर पर्वतों से घिरा है। हिन्दूकुश पर्वतमाला में ऐसे बहुत से दर्रे हैं जिसके उस पार कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उज्बेकिस्तान, चीन, रशिया, मंगोलिया, रशिया आदि जगह जा सकते हैं। यह हिमालय के उस पार से भारत में आने का आसान

रास्ता है, जबकि तिब्बत के रास्ते सिक्किम होते हुए भारत आना थोड़ा कठिन है।

प्राचीन लोगों ने अपने कुछ प्रमुख मार्ग निर्मित किए थे जिसमें से एक है सिल्क रूट। सिल्क रूट के एक छोर से दूसरे छोर पर जाने वालों के लिए हिन्दूकुश पर्वतमाला के विशेष क्षेत्रों में बने ऋषि- मुनियों के आश्रम जहां लोगों के लिए विश्राम स्थल थे वहीं यह दुनियाभर की जानकारी प्राप्त करने का क्षेत्र भी था। रोम के वेनिस, इसराइल के येरुशलम से तुर्की के इस्तांबुल तक और वहां से लेकर चीन के च्वानजो शहर तक यह रूट था। बीच में भारतीय क्षेत्र के शहर काबुल, पेशावर, श्रीनगर व्यापार के प्रमुख केंद्रों में से एक था। काबुल का पहले नाम कुम्भा था, जो वहां की एक नदी के नाम पर रखा गया था। यह क्षेत्र भारत के 16 जनपदों में से एक कंबोज के अंतर्गत आता था। पारास्य देश के तेहरान से एक रास्ता भारत की ओर तथा दूसरा रास्ता कैस्पियन सागर

और तुर्कमेनिस्तान की ओर जाता है। पहले अफगानिस्तान भारत का ही हिस्सा हुआ करता था। रोम से जियान तक : यह रोड तकरीबन 2000 साल पहले एशिया और यूरोप के बीच बिजनेस और कल्चरल एक्सचेंज का माध्यम था। यह मार्ग चीन के जियान शहर को रोम से जोड़ता था। दरअसल पुराने समय में चीन, भारत और पश्चिमी देशों के बीच रेशम का व्यापार हुआ करता था। जियान से रोम या रोम से जियान लोग दो रास्तों से जाते थे। इसमें एक रास्ता तो हिन्दूकुश के दरों से सीधे चीन जाने वाला रास्ता था तो दूसरा रास्ता भारत में होकर सिक्किम के नाथुला दरें से होकर चीन जाता था। हिन्दूकुश पर्वतमाला से लेकर नाथुला दरें तक बहुत सारे मठ मिल जाएंगे। तिब्बत और अफगानिस्तान उस दौर में धर्म का गढ़ बन गया था। हिन्दूकुश में दरों की भरमार है। यहां पहाड़ियों के बीच से कई सुगम और दुर्गम रास्ते हैं। इसलिए यह क्षेत्र पश्चिमी लोगों के लिए द्वार बन गया। हिन्दूकुश पर्वत 800 से ज्यादा

किलोमीटर तक तो लंबाई में फैला है और 200 किलोमीटर से भी अधिक इसकी चौड़ाई है।

और भी कई उप मार्ग थे : उस समय रेशम मार्ग वर्तमान के अफगानिस्तान, उज्बेकिस्तान, ईरान और मिस्र के अलेक्जेंडर नगर तक पहुंचता था और इसका एक दूसरा रास्ता पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के काबुल से होकर फारस की खाड़ी तक पहुंचता था, जो दक्षिण की दिशा में वर्तमान में कराची तक पहुंच जाता था और फिर समुद्री मार्ग से फारस की खाड़ी और रोम तक पहुंच जाता था।

लानड्लोउ यूनिवर्सिटी ऑफ फिनांस एंड इकोनॉमिक्स में शोधकर्ता गाओ कियान के अनुसार प्राचीन व्यापार मार्ग पर काबुल के बाद दुनहुआंग व्यवसाय का केंद्र था। प्राचीन रेशम मार्ग पर साहसिक यात्रा पर निकले लोग फारस की रोटी, भारत की मिठाइयां और अरब की नान खाते थे। इसके अलावा डोनर कबाब भी प्रसिद्ध था।

पुरातत्वीय खोज से पता चला है कि रेशम मार्ग ईसा पूर्व पहली शताब्दी के चीन के हान राजवंश के समय शुरू हुआ था। चीन ने इस मार्ग के माध्यम से पूरे विश्व में रेशम का व्यापार किया था। इस मार्ग से व्यापारियों के साथ ही फौजें भी गुजरने लगीं, फिर धार्मिक समूह भी। और इस तरह इस व्यापारिक मार्ग की गतिविधि के कारण ही मार्ग में पड़ने वाले सभी प्रमुख नगरों और राज्यों के सामाजिक जीवन में भी कई परिवर्तन आए। खैर, अब बात करते हैं हिन्दूकुश पर्वतमाला की।

इस पर्वत माला का प्राचीन नाम पारियात्र पर्वतः हिन्दूकुश पर्वत का पहले नाम पारियात्र पर्वत था। कुछ विद्वान इसे परिजात पर्वत भी कहते हैं। इसका दूसरा नाम हिन्दू केश भी था। केश का अर्थ अंतिम सिरा।

हिन्दू केश : इसे हिन्दू केश इसलिए कहते थे कि यहां भारत की सीमा का अंत होता है। केश का अर्थ होता है अंत। जैसे हमारे शरीर में केश (बाल) अंतिम सिरे के समान होते हैं। यहां तक भारत में रहने वाले

हिन्दुओं का क्षेत्र था अर्थात् हिन्दुओं के क्षेत्र की सीमा का अग्रभाग।

राम के कुश : यहां भगवान राम के एक बड़े बेटे कुश ने तपस्या की थी। तपस्या के बाद उन्होंने यहां पर अमृत दीक्षा ग्रहण की थी। कुश यहां के आसपास के संपूर्ण क्षेत्र पर अपना अधिकार रखते थे। इस पर्वतमाला के आसपास रहने वाली कई जातियों के नाम कुश के ऊपर ही हैं। लव और कुश राम तथा सीता के जुड़वां पुत्र थे। उनका जन्म माता सीता के अयोध्या से निर्वासन के पश्चात वाल्मीकि आश्रम में हुआ था और यहीं पर दोनों बालकों का लालन-पालन हुआ। अतः दक्षिण कोसल प्रदेश में कुश और उत्तर कोसल में लव का अभिषेक किया गया था।

इस पर्वतमाला पर सिकंदर का कब्जा...

पश्चिमोत्तर भारत में विदेशियों का आक्रमण मौर्योत्तर काल में सर्वाधिक हुआ। सबसे पहले इस क्षेत्र पर यूनानियों ने आक्रमण किया। फिर सिकंदर ने जब इसे अपने कब्जे में ले लिया तो इसका नाम यूनानी भाषा में 'कौकासोश इन्दिकौश' यानी

'भारतीय पर्वत' बुलाया जाने लगा। बाद में इनका नाम 'हिन्दूकुश', 'हिन्दू कुह' और 'कुह-ए-हिन्दू' पड़ा। हिन्दु का मतलब गुलाम और 'कुह' या 'कोह' का मतलब फारसी में 'पहाड़' होता है और कुश का मतलब कातिल। गुलामों का पहाड़ अर्थात् गुलामों का कातिल।

विदेशी आक्रमणकारियों की इस शृंखला में सबसे पहले 'बैक्ट्रन ग्रीक' शासकों का नाम आता है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में इन्हें 'यवन' के नाम से जाना जाता है। इतिहास के इस काल की जानकारी बौद्ध ग्रंथों में मिलेगी। हिन्दुकुश पर्वत एवं 'ऑक्सस' के मध्य में स्थित 'बैक्ट्रिया' अत्यन्त ही उपजाऊ प्रदेश था। इसके उपजाऊपन के कारण ही 'स्ट्रैबो' ने इसे 'अरियाना गौरव' कहा। बैक्ट्रिया में यूनानी बस्तियों का प्रारम्भ 'एकेमेनिड काल' (लगभग 5 वीं शताब्दी ई.पू.) में हुआ। सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् बैक्ट्रिया पर सेल्युकस का अधिपत्य रहा। सेल्युकस वंश के

'आन्तियोक्स तृतीय' ने 'यूथीडेमस' को बैक्ट्रिया का राजा मान लिया और 206 ईपू में भारत के विरुद्ध एक अभियान का नेतृत्व किया। यह अभियान हिन्दुकुश पर्वत को पार कर काबुल घाटी के एक शासक सुभगसेन के खिलाफ किया गया था। सुभगसेन को पॉलिबियस ने 'भारतीयों का राजा' कहा। सम्भवतः सुभगसेन द्वारा सांकेतिक समर्पण के बाद एण्ट्योकस ढेर सारे हाथी एवं हरजाने की बड़ी धनराशि लेकर वापिस चला गया। इसके बाद डेमेट्रियस और मीनेंडर (मिलिंद) नामक यवन शासकों ने इस पर्वत माला से आकर हमले किए। इस के बाद पार्थियन (पहलव), शक (सीथियन), कुषाण और हूण ने अफगानिस्तान (आर्यना) पर हमले किए। फिर अरब और तुर्की के खलिफाओं ने हमले किए। सिकन्दर के बाद डेमेट्रियस पहला यूनानी शासक था, जिसकी सेना भारतीय सीमा में प्रवेश कर सकी थी। उसने एक बड़ी सेना के साथ लगभग 183 ई.पू. में हिन्दुकुश पर्वत को पार कर सिंध और पंजाब पर

अधिकार कर लिया। तब योग के महान ऋषि पातांजली काबुल क्षेत्र में रहते थे। वे वही के निवासी थे। उन्होंने अपनी पुस्तक महाभाष्यण 'गार्गी संहिता' एवं मालविकाग्निमित्रम् में इसका जिक्र किया है।

कैसे पड़ा हिन्दूकुश नाम...हिन्दू क्षेत्र पर्वत : इसे हिन्दू क्षेत्र नहीं कहते थे। यहां से गुजरने वाले लोग इसे हिन्दू क्षेत्र कहते थे इसलिए इस पर्वतमाला का नाम हिन्दू क्षेत्र पड़ गया। काराकोरम और हिन्दूकुश के बीच भारतीय राज पर्वतमाला है, जहां भारतीय ऋषियों के आश्रम और राजाओं के सैन्य शिविर थे। यहां गुरु लोग बाहर से आने वाले लोगों को ज्ञान देते थे। ईसा से 700 वर्ष पूर्व ही अफगानिस्तान (आर्याना) क्षेत्र में राजनीतिक, व्यापारिक और धार्मिक गतिविधियां तेजी से बढ़ने लगी थीं। बौद्धकाल में यहां का बामियान नगर बौद्ध धर्म की राजधानी था। बहुत से तुर्की, चीनी और अरब के लोग जो यहां आते-जाते थे वे क्षेत्र शब्द नहीं बोल

पाते थे। क्षेत्र को छेत्र कहते थे। क+श+त्र उक्त तीन शब्द से मिलकर बना क्षेत्र इसलिए कुछ लोग हिन्दू कक्षेत्र भी कहते थे। इस तरह यह क्षेत्र शब्द बोलने वाले लोगों के कारण बिगड़ता गया। क्ष और त्र बोलना आम लोगों के लिए थोड़ा कठिन था इसलिए इसमें से त्र भी हटा दिया गया और रह गया हिन्दू केश।

क्या यहां हिन्दुओं का कत्ल हुआ था...मध्य काल:.... सन् 1333 ईस्वी में इब्रबतूता के अनुसार हिन्दुकुश का मतलब 'मारने वाला' था। इसका मतलब था कि यहां से गुजरने वाले लोगों में से अधिकतर ठंड और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण मर जाते थे। लेकिन इब्रबतूता की इस बात का कुछ लोगों ने गलत अर्थ भी निकाला? उनके अनुसार उत्तरी भारतीय उपमहाद्वीप पर अरबों-तुर्कों के कब्जे के बाद हिन्दुओं को गुलाम बनाकर इन पर्वतों से ले जाया जाता था और उनमें से बहुत से हिन्दू यहां बर्फ में मर जाया करते थे। इस तरह की बातें करने वालों ने खुदकुशी से इस शब्द का अर्थ

लिया। यहां हिन्दू खुदकुशी कर लेते थे इसलिए पहले हिन्दूकुशी और फिर हिन्दूकुश हो गया।

कहते हैं कि मुगलकाल में अफगानिस्तान को हिन्दूविहीन बनाने के लिए जो कत्लेआम का दौर चला उस दौर में आक्रांताओं ने इस पर्वतमाला को हिन्दुओं की कत्लगाह बना दिया था। यहां भारत के अन्य हिस्सों से लाखों की तादाद में गुलामों को लाकर छोड़ दिया जाता था या उन्हें अरब की गुलाम मंडियों में बेच दिया जाता था। माना जाता है कि अरब, बगदाद, समरकंद आदि स्थानों में काफिरों की मंडियां लगा करती थीं, जो हिन्दुओं से भरी रहती थीं और वहां स्त्री-पुरुषों को बेचा जाता था। उनसे सभी तरह के अमानवीय काम करवाए जाते थे। उनके जीवन का कोई अस्तित्व नहीं होता था। यातनाओं से केवल वही थोड़ा बच सकते थे, जो इस्लाम में परिवर्तित हो जाते थे। फिर उनको भी शेष हिन्दुओं पर मुस्लिम तरीके के अत्याचार करने का अधिकार प्राप्त हो जाता था। लेकिन इस बात में कितनी सचाई है यह कोई नहीं जानता। माना जाता

है कि तैमूरलंग जब एक लाख गुलामों को भारत से समरकंद ले जा रहा था तो एक ही रात में अधिकतर लोग 'हिन्दू-कोह' पर्वत की बर्फीली चोटियों पर सर्दी से मर गए थे। इस घटना के बाद उस पर्वत का नाम 'हिन्दूकुश' (हिन्दुओं को मारने वाला) पड़ गया था। लेकिन हिन्दूकुश नाम तो सिकंदर के पहले से ही प्रसिद्ध है? फिर हिन्दुओं के मरने से यह नाम कैसे पड़ा, यह समझ से परे है।

अब समझ लीजिए हिन्दु कौन ? हिन्दु शब्द किसी वेद, पुराण या उपनिषद् में नहीं मिलता, जब भारतवर्ष पर आक्रमणकारियों ने हमले किये तो सिन्ध नदी रुकावट में आती थी, वह स शब्द को ह का उच्चारण करते थे जिसे व हिन्दु बोलते थे, सिन्ध नदी के इधर रहने वाले सारे हिन्दु थे, उस दृष्टीकोण से पाकिस्तान के मुस्लिम समुदाय भी सब हिन्दु हैं। यह इतिहासकारों का मानना है। वास्तव में हिन्दु फारसी का शब्द दास जो भारतीयों के लिए प्रयोग किया गया। इंडिया भी इंडो (सिन्धु) से ही बना,

लगभग 800 वर्ष पूर्व हिन्दोस्तान शब्द भी नहीं था तब यह भारतवर्ष कहलाता था, तो हिन्दुत्व क्या ? यदि हिन्दुत्व को वैदिक या वैष्णव सभ्यता से मिलाए तो सर्वे भवन्तु सुखिनः सब जीव जगत के सुखी रहे, यह हमारी संस्कृति कहती है, बोद्ध धर्म भारत में ही महात्मा बुद्ध एक राज घराने में युवराज होकर जब देखा वैदिक युग में पतन हो रहा है, जात-पात का बोलबाला हो रहा है, शूद्र को शिक्षा नहीं दी जाती उसे धर्म कार्य नहीं करने दिए जाते तो यह अन्याय असहनीय हो गया, ऐसा ही भगवान महावीर ने महसूस किया और जन कल्याण के लिए तप-त्याग का रास्ता अपनाया। दोनों महापुरुष समकालीन हुए हैं और समाज सुधारका इन महापुरुषों ने का सब की आत्मा एक समान है कोई नीच नहीं, जो कार्य नीच करे वही नीच है। सब को धर्म करने का ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार है। जिससे राजे महाराजे इन दर्मों के अनुयायी बन गये। जैन धर्म समयानुसार सम्प्रदायों में बंटा परन्तु सिद्धात सब के एक जैसे ही रहे। बुद्ध धर्म में भी महाराजा आशोक के समय तक 18 सम्प्रदायों में बंट

चुका था परन्तु उस समय बुद्ध धर्म के महान आचार्य नागार्जुन ने दो सम्प्रदायो को ही मान्यता दी, महायान और हीनयान यान का अर्थ होता है सवारी, महायान बड़ी सवारी, जो माहात्मा बुद्ध ही पार लंघा सकता है, इसमें मूर्ति पूजा का प्रचलन भी हो गया और बोद्ध भिक्षु एवं भिक्षुणियों को इकट्ठे रहना, सहवास करना और मास-मदिरा का प्रचलन होने लगा, विदेशों (चीन, तिब्बित, जपान) में तो फैल गया परन्तु भारत में जनता का मोह भंग हो गया। हीनयान लंका और ब्रह्मा में फैला।

निष्कर्ष यह ही निकलता है कि भारतीय सभ्यता ही सब से प्राचीन है और ज्ञान के प्रदाता भगवान ऋषभदेव ब्रह्मज्ञानी ही ब्रह्मा थे जिन्होंने सारा ज्ञान (वेद) दिया। आरम्भ में यह श्रुतज्ञान था, जो ऋषि-मुनियों के द्वारा हम तक पहुँचता रहा। प्राचीनकाल में ऋषियों द्वारा ही ज्ञान राजे-महाराजाओं को युवराजों को उनके आश्रम में ही दिया जाता था। वह ज्ञान सब प्रकार की युद्ध कौशल, मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र आदि में प्रावीण किया

जाता था। महाभारतकाल के बाद लगभग ऋषि परम्परा समाप्त हो गई और तापस युग हो गया। सन्त संन्यासी धूनी रमाकर तप किया करते थे। इस समय विश्व में 13 देशों में वैष्णव सभ्यता थाईलैंड, कम्बोडिया, म्यांमार, मलेशिया, सिंगपुर, नेपाल, श्रीलंका, बंगलादेश, पाकिस्तान, आयरलैंड, अमेरिका, कनाडा और न्यूजीलैंड अनुसार भारतीय यहाँ बसते हैं और अपने धर्मानुसार पूजा अर्चना करते हैं और मन्दिर, गुरुद्वारे भी हैं।

प्राचीन ऋषियों के आश्रम और आधुनिक विश्वविद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा (ज्ञान) में कितना अन्तर है, एक ऋषि अपने आश्रम में अपने शिष्यों को हर तरह का ज्ञान उपलब्ध करवाते थे, जिससे वह युद्ध कौशल, राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त करते थे। रामायण काल का एक प्रसंग आता है- जब श्री हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर जा रहे थे तो जब वह आयोध्या के ऊपर से जा रहे थे तो महाराज भरत की नींद खुल गई और भरत ने राक्षस जानकर बाण चलाकर

हनुमान जी को नीचे उतार लिया और जब पता चला श्री लक्ष्मण जी अचेत हैं और सूर्य उदय से पूर्व पहुँचना है, तब उन्होंने हनुमान जी से कहा- आप मेरे धनुष पर विराज जाएँ मैं जल्दी पहुँचा सकता हूँ परन्तु हनुमान जी ने अस्वीकार कर दिया, मैं स्वयं ही शीघ्र पहुँच जाऊँगा। परन्तु जैन रामायण में कुछ अलग तरह का वर्णन मिलता है, हनुमान जी भरत जी के पास आयोध्या आए और भरत जी के मामे की बेटी वैशल्या तप-त्याग से इतनी महान थी कि उसके स्नान के पानी जिस पर छिड़क दिए जाए तो वह रोग मुक्त हो जाता था, तो भरत जी को साथ लेकर वह उनके ननिहाल गये और प्रार्थना की परन्तु वैशल्या स्वयं जाने को तैयार हो गई और माता-पिता जी से आज्ञा प्राप्त कर उनके साथ चल पड़ी और भरत जी अपनी विद्या से हनुमान जी को कहा- मैं सूर्य उदय से पूर्व अपने बाण द्वारा पहुँचा देता हूँ, परन्तु हनुमान जी ने स्वयं ही उचित समझा।

आज ज्ञान प्राप्त करने के लिए अलग-अलग विश्वविद्यालय और अलग-अलग अध्यापक होते हैं,

फिर भी उतने कुशल नहीं हो पाते। वैष्णव संस्कृति काल को चार भाग में बाँटती है-तपोयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलयुग। ऋषि परम्परा तपोयुग से लेकर द्वापरयुग तक चलती रही। उस समय भारतवर्ष सोने की चिड़ियाँ कहलाता था। भारतीय कला अपने उत्कर्ष पर थी। भारतवर्ष में लोहे की कला विकसित हो चुकी थी जब की अन्य देश इस से वंचित थे। युद्ध कौशल में भी हमारा देश अग्रणी रहा है। यहाँ प्राचान शस्त्र विद्या की समानता आधुनिक शस्त्र विद्या शायद ही कर सके। उस समय के बाणों में ही वह सामर्थ्य थी जो आज के बाणों में भी सम्भव नहीं। उन बाणों का प्रयोग युद्ध में भी होता था, उनके द्वारा अनेक वस्तुएं इधर से उधर पहुँचाई जाती थी।

युद्ध कला में पारंगत होते हुए भी हम सदा शान्ति-प्रिय रहे हैं। यह कारण है कि विदेशी आक्रमणकारी हम पर हावी हो गये। वह भारतीय सभ्यता को देखकर चौंक गये कि भारतीय नारी कितनी पतिव्रता है, अपना सारा जीवन पति को

समर्पित कर देती है। विदेशियों ने भारतीय ज्ञान की प्रशंसा ही नहीं की अपितु उसको समझा और स्वीकार किया। औरंगजेब का भाई दाराशिकोह ने अठारह वर्ष तक संस्कृत का ज्ञान लेकर भारतीय शास्त्र, वेद और उपनिषद पढ़े और उनको अरबी में लिखे और कहा इससे अच्छा ज्ञान कहीं और नहीं मिल सकता।

झंडा ऊंचा रहे हमारा
सदा शक्ति सरसाने वाला, प्रेम-सुधा बरसाने वाला
वीरों को हर्षाने वाला, मातृभूमि का तन-मन सारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा।
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश छन-छन में
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिट जाए भय संकट सारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा।
इस झंडे के नीचे निर्भय, ले लोकतन्त्र हम अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्र-नागरिक है ध्येय हमारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा।

इसकी शान न जाने पाए, चाहे जान भले ही जाए
विश्व विजय करके दिखलाए, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा ।

स्वतन्त्र जैन जालन्धर 9855285970

86, करतार ऐवन्यु हैबोवाल, लुधियाना ।

swatantarjain@gmail.com

